भूमिका

मौजूदा विकास मॉडल अपनी अस्थाई प्रवृति के कारण सवालों के घेरे में है इसलिए स्थाई विकास की जरूरत महसूस की जा रही है। अधिकांश विकास परियोजनाएँ प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध क्षेत्रों में चलाई जा रही हैं। उस क्षेत्र के रहवासियों को आमतौर पर इसका लाभ नहीं मिल पाता है। इसके विपरीत कई बार उन्हें अपने मूलभूत अधिकारों से भी वंचित हो जाना पड़ता है। विकास के इसी के इसी स्वरूप के संबंध में जर्मन दार्शनिक वाल्टर बेंजामिन ने कहा है "विकास का हर नया सोपान बर्बरता के नये रूपों को जन्म देता है।"

सरकार देश भर में बड़े पैमाने पर बाँधों का निर्माण कर रही है। इन बहुउद्देशीय बाँध परियोजनाओं को लगातार स्थानीय लोगों के विरोध का सामना करना पड़ रहा है। गढ़वाल हिमालय भूकंपीय दृष्टि से बेहद संवेदनशील क्षेत्र है। इस क्षेत्र में स्थित टिहरी बाँध परियोजना के खिलाफ लगभग तीन दशकों तक सक्रिय रूप से आंदोलन किया गया। तमाम विरोधों के बावजूद साल 2006 में टिहरी बाँध का निर्माण पूरा हो गया। हालाँकि प्रभावित लोग अपनी माँगों को लेकर अभी भी आंदोलनरत हैं। शोधकार्य के दौरान पशुलोक पुनर्वासित क्षेत्र में कई लोगों से मुलाकात हुई। एक बुजुर्ग व्यक्ति का कहना था कि हम जब भी नाव से झील पार करते हैं तो हमें लगता है कि अपने घर के ऊपर से जा रहे हैं। उस एक चेहरे में मुझे दुनिया भर के तमाम विस्थापितों के चेहरे अपनी पीड़ा बाँटते नजर आए। विस्थापन से उपजी पीड़ा इन लोगों के चेहरों पर साफ देखी जा सकती है।

मेरा घर टिहरी बाँध स्थल से लगभग 65-70 किलोमीटर की दूरी पर है। बचपन में ननिहाल (पौड़ी) टिहरी शहर से होकर ही जाना होता था। कई बार यहाँ ठहरना भी होता था। मेरी स्मृतियों का यह शहर सिंगोरी मिठाई, भागीरथी नदी, राजमहल, घंटाघर, बस अड्डे, बाजार की गलियों में अभी भी मौजूद है। कुछ सालों बाद जब ऋषिकेश आना- जाना होता तो, गाड़ियों से गुजरते हुए बनती हुई झील को देखा। कई बार झील बन चुके इस को क्षेत्र स्टीमर से पार भी किया। टिहरी बाँध के कारण सिर्फ डूब क्षेत्र और उसके आस-पास के ही लोग प्रभावित नहीं हुए बल्कि पूरे क्षेत्र की जनता को कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ा है। यातायात का केंद्र रहे टिहरी शहर का स्थान कोई अन्य शहर नहीं ले पाया है। उसके स्थान पर बसाया गया शहर नई टिहरी एक ऊंची पहाड़ी पर है जो मुख्य क्षेत्रों से अलग पड़ जाता है।

"टिहरी बाँध आंदोलन का मीडिया कवरेज" विषय पर शोध करने के लिए इस क्षेत्र से जुड़े जीवन अनुभवों ने मुझे प्रेरित किया है। मीडिया समाज में घटित होने वाली तमाम घटनाओं का चलता-फिरता दस्तावेज होता है। इसलिए इस 'लघु शोध' के माध्यम से मैंने टिहरी बाँध आंदोलन में मीडिया की भूमिका की पड़ताल करने की कोशिश की है।

प्रस्तुत शोध को मैंने चार अध्यायों में विभाजित किया है। प्रथम अध्याय "प्रस्तावना एवं शोध प्रविधि" है। दूसरा अध्याय "टिहरी बाँध परियोजना का ऐतिहासिक परिचय" है जिसमें टिहरी शहर के इतिहास के साथ-साथ टिहरी बाँध परियोजना और इसके आंदोलन का इतिहास भी दिया गया है। तीसरा अध्याय "विकास के पूंजीवादी मॉडल का आमजन पर प्रभाव" है। इस अध्याय में विकास के वर्तमान परिदृश्य पर नजर डाली गई है एवं देश भर की अभी तक की विवादित बाँध परियोजनाओं को प्रस्तुत किया गया है। चौथा अध्याय है "आंकड़ों का संकलन, विश्लेषण एवं प्रस्तुतीकरण" इसमें समाचार पत्रों, प्रश्नावली एवं साक्षात्कार द्वारा एकत्रित सामग्री का प्रस्तुतीकरण एवं विश्लेषण किया गया है।

इस अध्ययन के प्रस्तुतीकरण के लिए मैं कृतज्ञता पूर्वक अपने शोध निर्देशक डॉ. अख्तर आलम की उपकृत हूँ जो शोध के संदर्भ में हर समय मेरे हौसले को बढाते रहे और एवं मेरा मार्गदर्शन किया। इस कार्य में लिए मैं उनका आभार प्रकट करती हूं।

इस लघु शोध कार्य के लिए मैं जनसंचार विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार राय का अभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने लघु शोध प्रबंध के चयन में मेरी सहायता की एवं समय-समय पर मुझे प्रोत्साहित करते रहे। शोध विषय के चयन में मार्गदर्शन एवं स्वीकृति प्रदान करने के लिए मैं डॉ. कृपाशंकर चौबे का भी आभार व्यक्त करती हूँ। इसके अलावा अरुण कुमार त्रिपाठी एवं विभाग के सभी अध्यापकों का आभार जिन्होंने विषय के प्रति समझ को बढ़ाने में मेरी विशेष सहायता की।

शोध कार्य के लिए मैंने जेएनयू के पुस्तकालय, हेमवतीनंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय के पुस्तकालय, नेहरू स्मारक संग्रहालय एवं पुस्तकालय की भी सहायता ली। इन पुस्तकालयों से जुड़े लोगों को भी मेरी ओर से आभार।

मैं विशेष तौर पर आभारी हूँ पत्रकार महिपाल सिंह नेगी की जिन्होंने मुझे तमाम सूचना स्रोतों तक पहुँचने में सहायता की एवं मेरी विषय संबंधी समझ बढ़ाने में सहयोग किया। 'युगवाणी' के संपादक संजय कोठियाल, 'नैनीताल समाचार' के संपादक राजीव लोचन शाह का भी आभार जिन्होंने मुझे अपने समाचार पत्रों की सामग्री प्रयोग करने की अनुमति दी।

मैं आभारी हूँ साथी अजय आनंद की जिन्होंने लघु शोध प्रबंध को पूरा करने में मेरी विशेष तौर पर सहायता की और हर समय मेरी मदद को तत्पर रहे। इसके अलावा रोहित कुमार, प्रकाश उप्रेती, ललित फुलारा, प्रवीन कुमार, आबिज रजा, अनुज, आरती शर्मा एवं अन्य साथियों का भी आभार जिन्होंने किसी न किसी रूप में शोध कार्य में मेरी सहायता की। मैं अपने माता-पिता का भी आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने मुझे घर की परिधि से बाहर निकालकर जिंदगी में आगे बढ़ने के अवसर दिए।

यह शोध प्रबंध मैं टिहरी बाँध आंदोलन में शामिल आंदोलनाकारी जनता को समर्पित करती हूं।